

वैश्विक बैंकिंग गतिविधियां

वैश्विक बैंकिंग उद्योग ने 2008-09 में वैश्विक संकट की पृष्ठभूमि में व्यापक आय हानि और अवलेखनों की हलचलयुक्त अवधि के बाद 2009-10 के दौरान कार्यनिष्पादन में कुछ सुधार दर्शाया। यद्यपि, व्यापक पैमाने के मौद्रिक और राजकोषीय प्रोत्साहन उपायों से आर्थिक रिकवरी आई और इक्विटी बाजारों में सुधार से वैश्विक बैंकिंग उद्योग को पूंजी और चलनिधि मजबूत करने और लाभप्रदता सुधारने में सहायता मिली, पर इसके बावजूद, बैंकों की आस्तियों और लाभप्रदता के संबंध में वैश्विक बैंकिंग उद्योग में अधोमुखी जोखिम संबंधी विभिन्न चिंताएं बनी रहीं। विस्तारित बासेल II ढांचे के तहत उच्च पूंजी प्रभार प्रस्ताव को ध्यान में रखते हुए, कुछ क्षेत्रों, विशेष रूप से यूरो क्षेत्रों में, वैश्विक बैंकिंग उद्योग को आगामी वर्षों में पुनःपूंजीकरण का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि निजी क्षेत्र का निधीयन अवधिपूर्ण हो रहा है और असाधारण सरकारी समर्थन वापस लिया जा रहा है।

1. परिचय

2.1 वैश्विक बैंकिंग उद्योग ने 2008 में वैश्विक वित्तीय संकट के कारण व्यापक आय हानि और अवलेखनों के संदर्भ में भारी हानि के बाद 2009 के दौरान कार्यनिष्पादन में कुछ सुधार दर्शाया। वैश्विक संकट के बाद हुआ एक प्रमुख सकारात्मक कार्य यह था कि 2010 के प्रथम तीन महीनों के दौरान वैश्विक बैंकिंग उद्योग के अंतरराष्ट्रीय दावे 2008 की तीसरी तिमाही के बाद पहली बार बढ़े थे। जहां केंद्रीय बैंकों और राष्ट्रीय प्राधिकारियों द्वारा किए गए मौद्रिक और राजकोषीय प्रोत्साहन उपायों ने बैंकिंग उद्योग को पूंजी और चलनिधि की स्थिति सुधारने में मदद की, वहीं 2009 की पहली छमाही में आर्थिक सुधार के बाद आस्ति-मूल्यों में हुई वृद्धि से बैंकिंग उद्योग को लाभप्रदता की स्थिति में आने में सहायता मिली। किंतु, लाभ की गुणवत्ता के संबंध में चिंता बनी रही जो कि मुद्रा-व्यापार और स्थिर-आय लिखतों से प्रेरित थी।

2.2 वैश्विक बैंकिंग कारोबार उसकी संकट के समय की स्थिति से काफी अच्छी स्थिति में होने के बावजूद, जोखिम-मुक्ति के लिए पूंजी के लिए और सामान्य उधार लेने और उधार देने के परिचालन में शामिल होने के लिए व्यापक राशि जुटाने की आवश्यकता निरंतर बनी हुई है। आइएमएफ की विश्व आर्थिक संभावना (डब्ल्यूईओ), जुलाई 2010 के अनुसार, अनुमानित उधार हानि में कमी आने के बावजूद, भावी चूकों की आशंका

संबंधी अनिश्चितता संदेह उत्पन्न करती है कि उधार हानि समाप्त हो गई है या नहीं। आगे बढ़ते हुए, निधीयन पक्ष पर दबाव डिलीवरेजिंग के कारण बैंक उधार को बाधित कर सकते हैं जिससे पूंजी और चलनिधि बफर को सुदृढ़ करने की जरूरत रेखांकित होती है। 2009 में वैश्विक बैंकिंग उद्योग की आय में देखी गई वृद्धि सरकारी ऋण संकट के यूरो क्षेत्र तक फैलने से और बैंकों की आय का प्रभावित होना जारी रहने के भय के परिणामस्वरूप 2010 की दूसरी तिमाही में रुक गई।

2.3 बैंक ऑफ इंग्लैंड वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर), जून 2010 के अनुसार, निजी क्षेत्र का निधीयन अवधिपूर्ण होने और असाधारण सार्वजनिक समर्थन वापस लिए जाने के कारण आगामी वर्षों में बैंक व्यापक पुनःपूंजीकरण की चुनौतियों का सामना करेंगे। वैश्विक रूप से, अनुमान है कि बैंकों के पास अगले तीन वर्षों में अवधिपूर्ण हो रही मध्य से दीर्घावधि की कम-से-कम 5 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर की निधि है। अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआइएस) की वार्षिक रिपोर्ट 2009-10 के अनुसार, वैश्विक बैंकिंग प्रणाली भावी हानियों के प्रति भेद्य है और निधीयन बाजारों में विचलन से रुख प्रतिकूल होने की स्थिति में पुनर्वित्तीयन माध्यमों में रुकावट आ सकती है। उसी समय, विस्तारित बासेल II पूंजी व्यवस्था के संबंध में विचारित समवर्ती सुधार और वित्तीय प्रणाली को मजबूत करने के लिए उठाए जा रहे अन्य विनियामक कदमों का भी बैंकिंग उद्योग पर प्रभाव होगा जिसमें चलनिधि और उधारकर्ताओं के

लिए महंगे कर्ज में कमी आएगी। इन सुधारों के प्रभावों का विनिर्णय अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा किया गया है जो कि छोड़ दी गई उत्पादन वृद्धि के विभिन्न अनुमान देते हैं (आइएमएफ, 2010; बीआइएस, 2010)।

2.4 उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के विपरीत, उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) में बैंकिंग प्रणाली संकट के दौरान आघात-सहनीय बनी रही जिसका अपवाद व्यापार और वित्तीय चैनलों के माध्यम से अप्रत्यक्ष प्रभाव था जिससे निर्यात मांग कम हो जाने और विदेशी वित्तीयन की संभावनाएं कम हो जाने से आर्थिक वृद्धि प्रभावित हुई। संकट का प्रभाव क्रमशः कम हो जाने से ईएमई में तेजी से सुधार हुआ और वृद्धि में फिर से तेजी आ गई और वैश्विक मांग को सहारा मिला। ईएमई में पूंजी अंतर्वाह पुनः शुरू हो गए जिससे 2009 के प्रारंभ से इक्विटी बाजारों में काफी सुधार हुआ। अधिकांश ईएमई में बैंकिंग प्रणाली अच्छी तरह से पूंजीबद्ध और लाभदायक बनी रही।

2.5 भारत में, आर्थिक सुधार को रिजर्व बैंक द्वारा किए गए विभिन्न मौद्रिक नीतिगत उपायों और सरकार के राजकोषीय प्रोत्साहन उपायों, जिनका उद्देश्य कुल मांग को प्रेरित करना था, से मजबूती मिली। किंतु, आगे यह दिखता है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में लगातार दुर्बलता से अधोमुखी जोखिम, विशेष रूप से व्यापार और वित्तीयन चैनलों पर विपरीत प्रभाव के माध्यम से, सामने आती है।

2. वैश्विक समष्टि-आर्थिक परिदृश्य

2.6 वैश्विक अर्थव्यवस्था में 2009 में 0.6 प्रतिशत की गिरावट के बाद 2010 की पहली छमाही के दौरान काफी सुधार हुआ। आइएमएफ (डब्ल्यूईओ, अक्टूबर 2010) ने 2010 के लिए वैश्विक वृद्धि पूर्वानुमान को अप्रैल 2010 के 4.2 प्रतिशत से बढ़ाकर 4.8 प्रतिशत और जुलाई 2010 में 4.6 प्रतिशत किया और 2011 के लिए 4.2 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान किया जिसमें 2010 की दूसरी छमाही और 2011 की पहली छमाही के दौरान अस्थायी मंदी रहेगी (सारणी II.1)। उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में विकसित अर्थव्यवस्थाओं की

तुलना में अधिक तेजी से वृद्धि होने का अनुमान है। आइएमएफ के अनुसार, वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुधार के बावजूद, अधोमुखी जोखिम बढ़ी हुई ही है क्योंकि अधिकांश विकसित अर्थव्यवस्थाएं और कुछ उभरती अर्थव्यवस्थाएं अभी भी प्रमुख समायोजनों का सामना कर रही हैं जिसमें घरेलू तुलनपत्रों को मजबूत करने, उच्च सरकारी ऋण को स्थिर करने और बाद में कम करने तथा उनके वित्तीय क्षेत्रों को दुरुस्त करने और सुधारने की आवश्यकता शामिल है। इनमें से अनेक अर्थव्यवस्थाओं में, वित्तीय क्षेत्र आघातों के प्रति अभी भी संवेदनशील हैं और नीतिगत प्रोत्साहन समाप्त होने के कारण वृद्धि कम हो रही है। अधिक सामान्य रूप से, वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्थिर और मजबूत सुधार दो पुनःसंतुलनकारी कार्यों पर निर्भर करता है: राजकोषीय समेकन को अनुमति देते हुए उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में निजी मांग को सुदृढ़ करके आंतरिक पुनःसंतुलन तथा घाटे वाले देशों में निवल निर्यात में वृद्धि और अधिशेष देशों में, विशेष रूप से उभरते एशिया में, निवल निर्यात में कमी के जरिए बाह्य पुनःसंतुलन। इन पुनःसंतुलन कार्यों की सहायता के लिए अनेक नीतियों की आवश्यकता है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में, वित्तीय क्षेत्र की दुरुस्ती और सुधार आवश्यक है ताकि सुदृढ़ कर्ज वृद्धि की बहाली हो सके और राजकोषीय समायोजन 2011 में शुरू होना जरूरी है जिसमें राजकोषीय नीतिगत प्रयासों के लिए नई संभावनाएं तैयार करने के लिए भावी बजट घाटा कम करने की विशिष्ट योजनाएं होंगी। ईएमई में नीतियों द्वारा वृद्धि के देशी स्रोतों को और विकसित करके, ढांचागत सुधारों और कुछ मामलों में विनिमय दर में अधिक लोच के माध्यम से वैश्विक मांग को पुनःसंतुलित किए जाने में मदद मिलनी चाहिए।

3. वैश्विक वित्तीय बाजार

2.7 मौद्रिक स्थिति सुगम बनी रही, जिसमें केंद्रीय बैंक की नीतिगत दर अपेक्षाएं निम्न स्तर पर बनी रहीं। अप्रैल 2010 तक, उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय बाजारों ने अच्छा सुधार दर्शाया। अंतर-बैंक उधार दर और विकासशील देशों की बांड-स्प्रेड लगभग सामान्य स्तर पर लौट आई। उच्च आय और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में शेयर

सारणी II.1: वैश्विक आर्थिक संभावना (डब्ल्यूईओ) के पूर्वानुमानों का विहंगावलोकन

(प्रतिशत)

1	साल-दर-साल					ति4 की तुलना में ति4		
	वास्तविक	पूर्वानुमान		जुलाई 2010 के डब्ल्यूईओ		अनुमान	पूर्वानुमान	
	2009	2010	2011	पूर्वानुमान से अंतर		2009	2010	2011
	2	3	4	5	6	7	8	9
वैश्विक उत्पादन¹	-0.6	4.8	4.2	0.2	-0.1	2.0	4.3	4.4
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	-3.2	2.7	2.2	0.1	-0.2	-0.4	2.4	2.5
अमरीका	-2.6	2.6	2.3	-0.7	-0.6	0.2	2.2	2.7
यूरो क्षेत्र	-4.1	1.7	1.5	0.7	0.2	-2.0	1.9	1.4
इंग्लैंड	-4.9	1.7	2.0	0.5	-0.1	-2.9	2.8	1.6
अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	-1.2	5.4	3.7	0.8	0.0	3.2	4.2	4.7
नई औद्योगिकृत एशियाई अर्थव्यवस्थाएं	-0.9	7.8	4.5	1.1	-0.2	6.1	5.2	6.6
उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं²	2.5	7.1	6.4	0.3	0.0	5.6	7.0	7.0
मध्य और पूर्वी यूरोप	-3.6	3.7	3.1	0.5	-0.3	1.8	2.9	4.3
ब्राजील	-0.2	7.5	4.1	0.4	-0.1	4.4	5.6	4.5
रूस	-7.9	4.0	4.3	-0.3	0.2	-2.9	3.2	5.0
भारत	5.7	9.7	8.4	0.3	0.0	7.3	10.3	7.9
चीन	9.1	10.5	9.6	0.0	0.0	11.4	9.9	9.6
एशियन-5 ³	1.7	6.6	5.4	0.2	-0.1	5.1	5.0	6.8
मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका	2.0	4.1	5.1	-0.4	0.2
मेक्सिको	-6.5	5.0	3.9	0.5	-0.5	-2.3	3.1	4.5

'...': अनुपलब्ध

टिप्पणी: 1. तिमाही अनुमान और पूर्वानुमान वैश्विक क्रय-शक्ति-समता भारांक के 90 प्रतिशत हैं।

2. तिमाही अनुमान और पूर्वानुमान उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लगभग 79 प्रतिशत हैं।

3. इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपीन्स, थाईलैंड और वियतनाम।

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (2010), वैश्विक आर्थिक संभावना अपडेट, अक्टूबर।

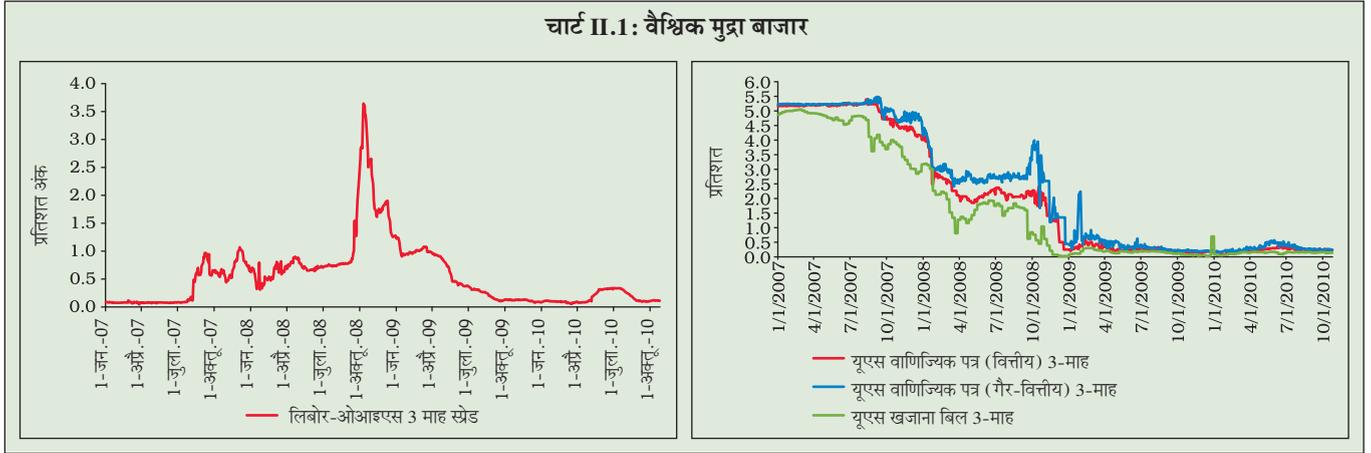
बाजारों ने हानि का अधिकतर भाग कवर कर लिया और अधिकांश विकासशील देशों की मुद्राओं ने डॉलर के प्रति उनका संकट-पूर्व स्तर प्राप्त कर लिया, जिनमें से कुछ में मूल्यवृद्धि भी हुई थी। जहां अत्यधिक बाजार तनाव कम हो गए, वहीं बाजार विश्वास 2010 के मध्य तक कम हो गया क्योंकि सरकारी ऋण संकट के कारण नवीकृत निधीयन बाधाएं उभरी थीं। आइएमएफ का एकीकृत अस्थिरता सूचकांक, जिसमें विभिन्न शेयर बाजारों के सूचकांकों पर ऑप्शन, ब्याज दर और विनिमय दर से आई निहित अस्थिरता शामिल होती है, मई 2010 में तेजी से बढ़ गया। जुलाई 2010 तक, बाजार तनाव कुछ कम हो गया था और अमरीकी खजाना, जर्मन बांड जैसी सुरक्षित आस्तियों और सोने का मूल्य बढ़ गया जिससे मुद्रा बाजार में मात्रा कम हो गई। 2010 के शुरुआती भाग में यूरो क्षेत्र में सरकारी जोखिम की गहनता ने भी मई 2010 के अंत तक कुछ कमी के चिह्न

दिखाए जिसमें यूरोपीय स्थिरता निधि और ईसीबी के चलनिधि सहायता कार्यक्रम की घोषणा शामिल थी। किंतु, स्पेन और इटली जैसे व्यापक रोलओवर की आवश्यकता वाले देशों की सरकारी स्प्रेड लगातार काफी ऊंचे स्तर पर बनी रही।

मुद्रा बाजार

2.8 जबकि 2008 में मुद्रा बाजार की मात्रा में गिरावट चलनिधि की जमाखोरी, और प्रतिपक्षी तथा संपार्श्विक चिंताओं के कारण हुई थी, वहीं 2009 के दौरान विश्व भर में केंद्रीय बैंकों और सरकारों द्वारा की गई अपूर्व नीतिगत कार्रवाई से निधीयन दबाव और प्रतिपक्षी चिंताएं कम होकर मुद्रा बाजार की स्थिति स्थिर करने में सफलता मिली। अंतर-बैंक बाजार 2010 की पहली तिमाही में सक्रिय हो गए जैसा कि लिबोर और ओवर नाइट इंडेक्स स्वैप के बीच स्प्रेड कम होने से पता

चार्ट II.1: वैश्विक मुद्रा बाजार



चला था (चार्ट II.1)। लगातार मात्रात्मक कर्ज-सुगमता, चलनिधि सहायक उपाय और सरकारी गारंटीयुक्त निधीयन कार्यक्रमों ने अल्पावधि मुद्रा बाजारों के कार्यों में सुधार के लिए सहायता की और प्रतिभूतिकृत बाजार में कुछ सुधार हुआ। परिणामस्वरूप, पहले देखी गई स्प्रेड की तेज कड़ाई को उलटते हुए मौद्रिक और वित्तीय स्थिति सुगम हुई। इसके साथ-साथ, आस्ति-मूल्यों में आस्ति श्रेणियों के दायरे में लगातार सुधार होने से बाजार और चलनिधि की जोखिमों भी कम हो गई थीं। लिबोर-ओवरनाइट इंडेक्स स्वैप (ओआइएस) स्प्रेड अप्रैल 2010 के अंत तक कम हो जाने के बावजूद, ऐसे संकेत दिख रहे थे कि मुद्रा बाजार अब तक सामान्य कार्य-स्थिति में नहीं आ पाया था। यह इस बात से स्पष्ट था कि लिबोर और यूरीबोर पैनल बैंकों के योगदान से उनके संबंधित बेंचमार्क संकट पूर्व स्थिति से अधिक विस्तारित बने हुए थे। बाद में, 2010 के मध्य के आसपास सरकारी ऋण संकट के विस्तार से बढ़ी हुई प्रतिपक्षी चिंताओं के कारण गंभीर अंतर-बैंक निधीयन तनाव उत्पन्न हुआ जिससे दीर्घावधि लिबोर-ओवर नाइट इंडेक्स स्वैप (ओआइएस) स्प्रेड बढ़ गया।

सरकारी स्प्रेड

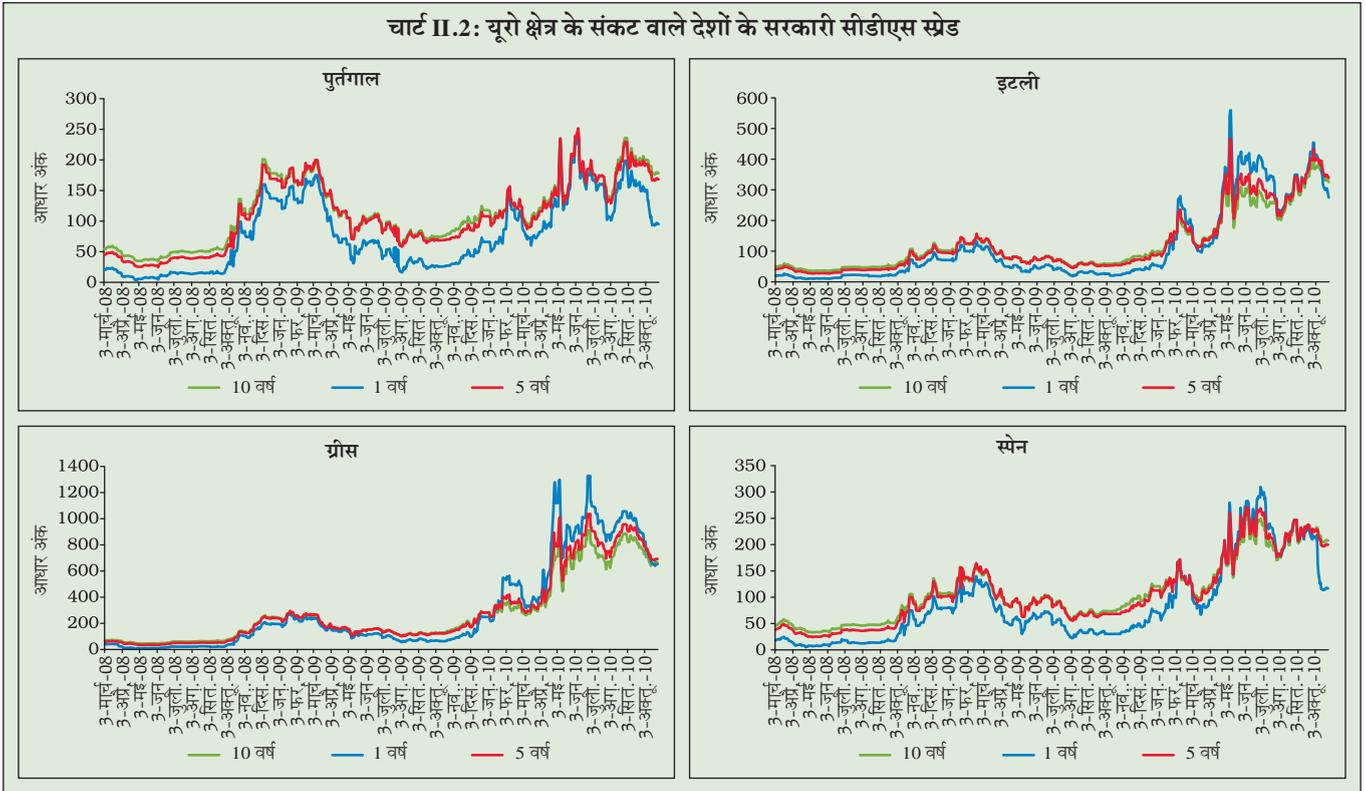
2.9 व्यापक राजकोषीय प्रोत्साहन, वित्तीय बचाव पैकेज और कर राजस्व में गिरावट के संयुक्त प्रभाव से ऐतिहासिक व्यापक सरकारी बजट घाटा हुआ और अधिकांश औद्योगिक देशों में, विशेष रूप से यूरोजोन में वास्तविक और अनुमानित सरकारी ऋण के स्तर बढ़ गए। चिंताएं ग्रीस की राजकोषीय

स्थिति पर केंद्रित हो गईं किंतु पुर्तगाल और स्पेन जैसे अन्य देशों तक फैल गईं जो उच्च राजकोषीय घाटे और स्पर्धात्मकता की कमी का सामना कर रहे थे। ग्रीक सरकारी बांड आय और सीडीएस स्प्रेड दिसंबर 2009 में बढ़ने लगे और अप्रैल 2010 के अंत में चरम पर पहुंच गईं जब स्टैंडर्ड और पूअर्स ने ग्रीक ऋण का दर्जा घटाकर उसे 'जंक' स्टेटस प्रदान की। उसी सप्ताह में, उक्त एजेंसी ने पुर्तगाल और स्पेन संबंधी अपनी रेटिंग कम कर दी जिससे उनके सीडीएस स्प्रेड में तेज वृद्धि हुई। ऊंचे बांडों और सीडीएस स्प्रेड के प्रतिसाद में, ईयू और आइएमएफ ने 750 बिलियन अमरीकी डॉलर के संयुक्त राजकोषीय स्थिरीकरण पैकेज की घोषणा की। इस घोषणा और ग्रीस, स्पेन तथा पुर्तगाल द्वारा प्रस्तावित किफायत के उपायों के कारण सरकारी बांड और सीडीएस स्प्रेड अपने ऊंचे स्तर से नीचे आ गए। अगस्त 2010 के अंत तक, विकसित अर्थव्यवस्थाओं में सरकारी कर्ज की गुणवत्ता संबंधी चिंताएं फिर से उभरी प्रतीत हो रही हैं। कमजोर सरकारी बांडों के स्प्रेड उनके बेंचमार्क के प्रति उनके 7 मई 2010, अर्थात् यूरोपीय वित्तीय स्थिरता सुविधा की घोषणा से एक दिन पहले, के स्तर तक और स्पेन और आयरलैंड के मामले में रेकार्ड स्तर तक बढ़ गए (चार्ट II.2)।

इक्विटी बाजार

2.10 विकसित देशों और उभरते बाजारों के इक्विटी बाजार लगभग एक समान बढ़े जो अधिक एकात्मता दर्शाते हैं (चार्ट II.3)। वित्तीय स्थिरता बनाए रखने और आर्थिक

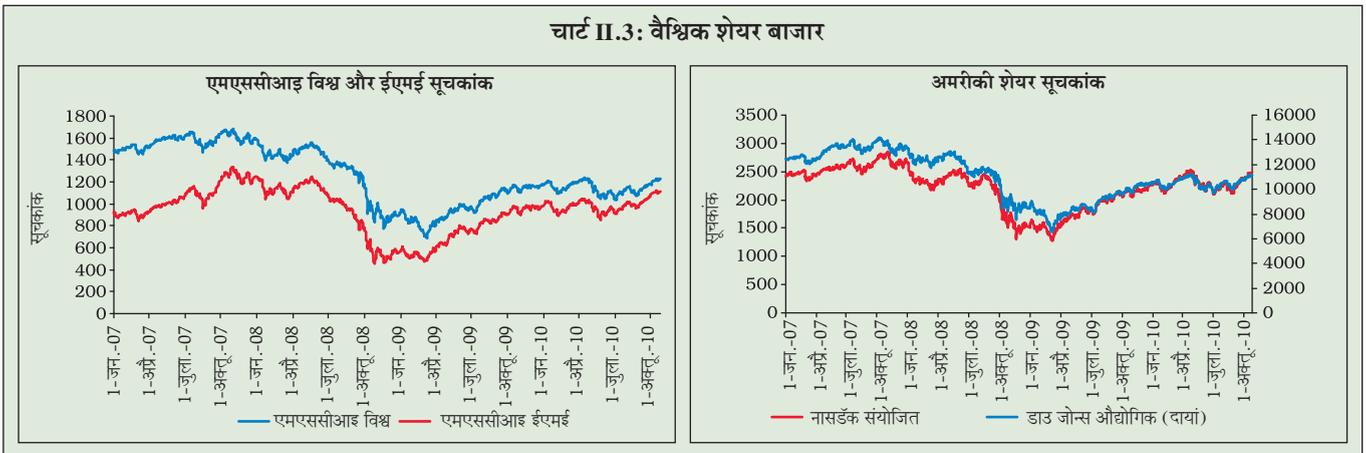
चार्ट II.2: यूरो क्षेत्र के संकट वाले देशों के सरकारी सीडीएस स्प्रेड



सुधार के पोषण के लिए राष्ट्रीय प्राधिकारियों द्वारा किए गए असाधारण प्रोत्साहन उपायों से वैश्विक शेयर बाजारों को 2009 में हानियों की भरपाई करने में मदद मिली। किंतु, मार्च 2010 तक सामने आए सरकारी ऋण संकट की गहराई और प्रभाव दिखने से वैश्विक शेयर बाजारों में पुनः दुर्बलता आ गई। भारत सहित उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में इक्विटी बाजारों ने आंतरिक मांग की शक्ति के बल पर आर्थिक

संभावनाओं में तेज सुधार के परिणामस्वरूप 2010 की पहली छमाही के दौरान पूंजी अंतर्वाहों और शेयर मूल्यों में तेजी देखी। 2010 की पहली छमाही के अंत तक, विकसित विश्व में सरकारी संकट और आर्थिक सुधार में लगातार कमजोरी के प्रभाव से समग्र वैश्विक अधोप्रवृत्ति आई, हालांकि चुनिंदा बाजारों विशेष रूप से ईएमई में, अब भी मध्यवर्ती ऊर्ध्वप्रवृत्ति थी।

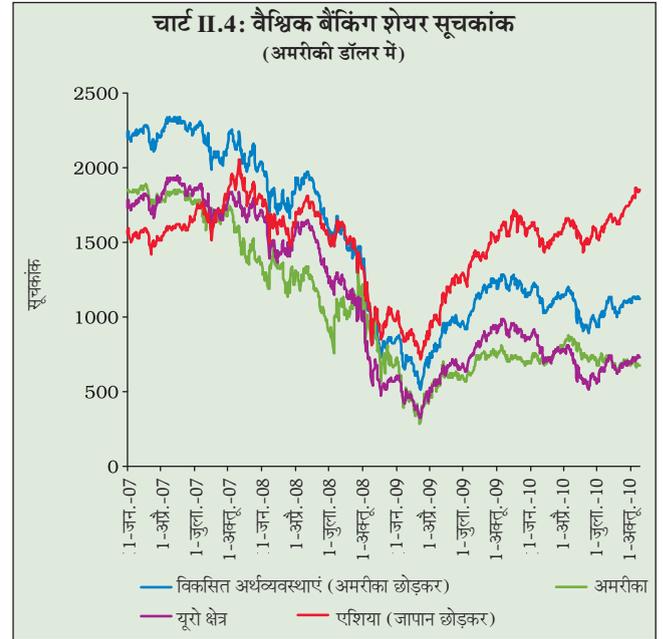
चार्ट II.3: वैश्विक शेयर बाजार



2.11 2009-10 में बैंकिंग शेयरों की प्रवृत्ति ने वैश्विक समष्टि आर्थिक वातावरण की शक्ति और वित्तीय प्रणाली की चुनौतियां दर्शाई (चार्ट II.4)। यूरो क्षेत्र और अमरीका सहित उन्नत अर्थव्यवस्था में, बैंकिंग शेयर अपनी संकट पूर्व की स्थिति पर नहीं पहुंच पाए। किंतु, ईएमई में और विशेष रूप से एशिया में, बैंक शेयरों ने मजबूत तुलन पत्रों और वृद्धि की संभावना के कारण तेज सुधार दर्शाया और वे संकट-पूर्व स्थिति के करीब पहुंच गए।

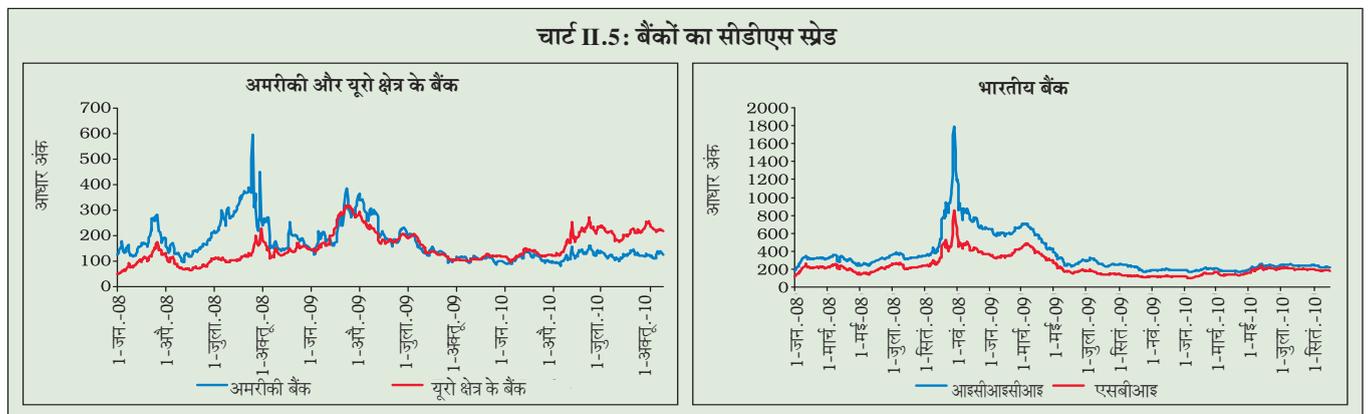
बैंक सीडीएस बाजार

2.12 औसत बैंक कर्ज चूक स्प्रेड अप्रैल 2009 के प्रारंभ में अमरीका, यूके और यूरो क्षेत्र के बैंकों के संबंध में तेजी से बढ़ी किंतु बाद में 2009 की अधिकतर अवधि के दौरान लगातार कम हुई (चार्ट II.5)। अमरीकी बैंकों के लिए सीडीएस स्प्रेड 2010 में लगातार कम बने रहे। यूरो क्षेत्र के बैंकों के संबंध में सीडीएस स्प्रेड अप्रैल 2010 के आरंभ से तेजी से बढ़े जो सरकारी ऋण संकट यूरोप तक पहुंच जाने के प्रभाव संबंधी अनिश्चय और संकटयुक्त देशों में यूरो क्षेत्र के बैंकों के एक्सपोजर की पहचान होना दर्शाता है। सर्वाधिक प्रभाव उन बैंकों की कर्ज का स्प्रेड पर पड़ा जिनके मुख्यालय उन देशों में और विशेष रूप से ग्रीस, पुर्तगाल और स्पेन में थे जिनकी मानी हुई कर्ज क्षमता अत्यधिक प्रभावित हुई थी। भारत में, 2008 में दवाब में आए कुछ बैंकों के सीडीएस स्प्रेड ने 2009-10 के दौरान काफी कमी की प्रवृत्ति दर्शाई।



कर्ज बाजार

2.13 वैश्विक संकट के परिप्रेक्ष्य में, निजी क्षेत्र को बैंक कर्ज की वृद्धि में विकसित अर्थव्यवस्थाओं में गिरावट आई, सरकारी क्षेत्र द्वारा सहायता प्राप्त उनके बाहर के प्रतिभूतिकरण बाजार कमजोर बने रहे और कम गुणवत्ता वाले उधारकर्ताओं की पहुंच पूंजी बाजार के निधीयन में बंद हो गई। अपारंपरिक नीतियों का लक्ष्य अंतिम उधारकर्ताओं को कर्ज देने को पुनरुज्जीवित करना होने के बावजूद, बैंक उधार सीमित बने रहे (सारणी II.2)। कर्ज और मात्रात्मक सुगमता की नीतियों के बावजूद, उधार दरों के प्रतिनिधित्व वाले वैश्विक वास्तविक निजी उधार और



सारणी II.2: निजी क्षेत्र को बैंक उधार में वृद्धि

(प्रतिशत)

तिमाही	अमरीका	यूके	फ्रांस	जर्मनी	जापान	इटली	ग्रीस	स्पेन	चीन	रूस	ब्राजील	मेक्सिको	भारत
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ति1 2007	11.8	13.0	10.0	0.5	1.0	12.9	16.8	24.0	16.3	51.0	34.4	29.1	25.7
ति2 2007	10.3	11.1	11.7	-0.5	0.7	12.3	20.6	22.4	17.6	53.2	33.7	28.4	23.3
ति3 2007	11.3	13.1	13.4	-0.8	0.7	10.6	15.2	20.2	19.5	54.5	40.9	30.5	20.1
ति4 2007	11.2	12.9	13.4	0.8	0.1	19.7	21.8	16.7	19.3	50.9	36.6	27.3	20.4
ति1 2008	12.4	12.2	13.8	1.4	1.2	18.4	26.1	14.3	17.7	49.9	33.8	18.8	21.6
ति2 2008	10.6	13.4	11.3	2.6	2.0	17.9	18.2	11.3	15.4	45.5	30.5	14.7	25.1
ति3 2008	8.2	12.0	8.5	4.2	1.8	18.1	13.1	8.6	14.1	41.3	27.5	6.1	24.5
ति4 2008	8.1	13.1	6.2	5.1	4.1	7.5	25.3	6.4	14.0	35.9	30.1	5.5	22.3
ति1 2009	3.3	13.7	2.5	4.7	3.6	7.6	9.6	4.0	23.6	29.3	18.2	8.6	16.7
ति2 2009	2.1	7.9	0.5	4.7	2.5	5.4	1.6	1.5	30.2	16.5	16.3	4.2	14.3
ति3 2009	-2.2	5.1	-1.0	1.9	1.6	2.5	-3.4	-0.1	32.1	8.3	7.7	4.7	11.9
ति4 2009	-7.8	2.8	-0.7	0.4	-1.2	2.3	-19.5	-1.6	33.1	1.9	5.3	-0.2	12.1
ति1 2010	-8.0	5.0	1.2	-1.2	-2.0	0.3	-15.8	-1.7	24.8	-1.1	8.5	-0.6	17.1
ति2 2010	-2.7	5.9		-1.2	-2.1	3.7	4.2	-0.6	20.1	5.9	14.9	3.0	

टिप्पणी : वृद्धि दर एक वर्ष पूर्व की संबंधित तिमाही की तुलना में है।

स्रोत : डाटास्ट्रीम, आइएमएफ, आइएफएस।

आवास, उपभोक्ता और कंपनी कर्ज और प्रतिभूतियां, बकाया कर्ज के संबंधित हिस्से से भारांकित, अप्रैल 2009 से स्थिर बने रहे। इसके अलावा, सरकारी क्षेत्र का हस्तक्षेप, जिससे निजी क्षेत्र की जोखिम कम हो गई थी, से सरकारी क्षेत्र की ऋणग्रस्तता और राजकोषीय विफलता बढ़ गई। किंतु, अक्टूबर 2009 तक, बाजार और चलनिधि जोखिम कम हो गई क्योंकि अंतरबैंक बाजारों और निजी थोक निधीयन बाजारों के कुछ चैनल फिर से खुल गए थे और प्रणालीगत बिखराव की चिंताएं और आर्थिक विफलता कम हो जाने से बाजार अस्थिरता कम हो गई। वित्तीय संस्थाएं निधीयन के लिए सरकार पर पूर्णतः निर्भर नहीं थीं और वरिष्ठ गैर-जमानती कर्ज निधीयन जुटाने में समर्थ थीं। सुदृढ़ बैंकों को किसी भी प्रमुख मुद्रा में मध्यावधि से दीर्घावधि निधीयन प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। किंतु, कुछ दुर्बल बैंक अंतरबैंक या पूंजी बाजारों तक पहुंच बनाने में कम समर्थ थे, उनके लिए मात्र दंडात्मक दर थी।

2.14 आगे, कर्ज में सुधार का प्रतिसाद धीमा होगा क्योंकि बैंक अब भी अपने तुलन पत्रों को ठीक करने में लगे हुए थे। निजी कर्ज मांग में कुछ सुधार के चिह्न दिखने के बावजूद, सरकारी निधीयन में तेज वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि क्षमता बाधा को दूर करने के लिए नीतिगत उपाय तेजी से किए जाएं। आगामी

अवधि में निजी कर्ज में वृद्धि लगातार कमजोर बनी रह सकती है क्योंकि वित्तीय बाधाओं और सरकारी मांग से उधार अतिभारित हो गए हैं। बैंकेतर वित्त बैंक वित्त का मात्र आंशिक विकल्प कोने के कारण सामान्यतः बैंक उधार पर निर्भर रहने वाले हाउसहोल्ड और एसएमई को कर्ज बाधा का सामना करना पड़ सकता है। केंद्रीय बैंकों ने उनके द्वारा उपलब्ध कराई गई चलनिधि सहायता की क्रमिक वापसी शुरू करने के कारण कर्ज की समग्र स्थिति कमजोर होने की आशंका है।

कंपनी बांड बाजार

2.15 कंपनी बांड बाजार 2010 में अपनी सामान्य कार्यस्थिति में लौटे (आइएमएफ, वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (जीएफएसआर) जुलाई 2010)। किंतु, बैंक कर्ज बाजार कड़ा हो जाने के कारण, कंपनी कर्ज और आस्ति समर्थित प्रतिभूति स्प्रेड कड़ी हो गई और बैंक कर्ज में कमी आने के कारण फर्मों द्वारा विकल्प ढूंढने के कारण निर्गम बढ़ गए। उच्च प्रतिफल वाले निर्गम भी बढ़े किंतु वे उच्च गुणवत्ता के कर्ज तक सीमित थे और स्प्रेड ऐतिहासिक रूप से व्यापक था। अल्पावधि ब्याज दरों और निजी उधार दरों के बीच का अंतर संकट की शुरुआत से अपने व्यापकतम स्तर पर होने के बावजूद, कंपनी ऋण और

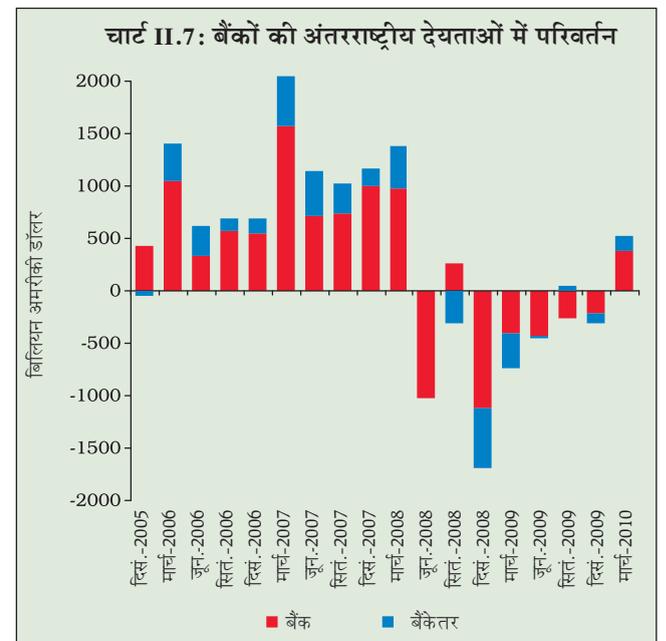
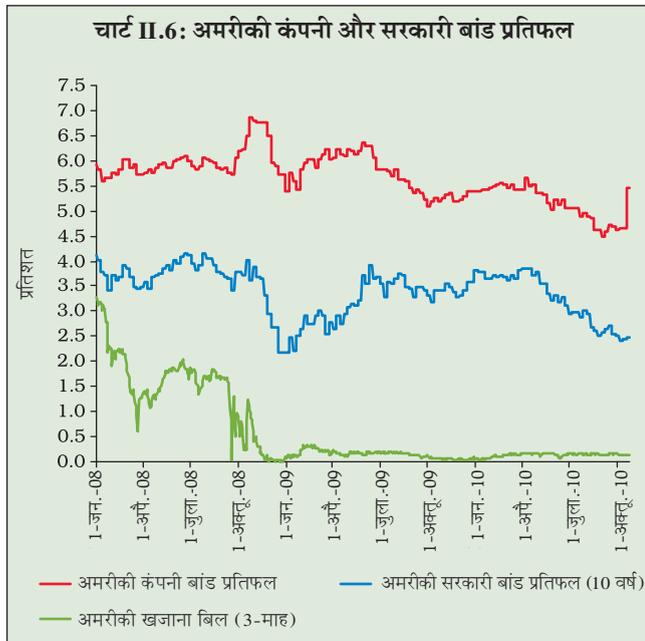
प्रतिभूतियों की वैश्विक वास्तविक निजी उधार दरें वर्ष की पहली तिमाही की तुलना में स्थिर हो जाने से निवेशक विश्वास में सुधार होने और प्रतिपक्षी जोखिम कम हो जाने से जोखिम लेने की तैयारी में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखी। किंतु, सरकारी ऋण के प्रसार की जोखिम, जिससे अप्रैल 2010 के दौरान बाजार अस्थिर हो गए थे, से कर्ज स्प्रेड का विस्तार गैर-वित्तीय कंपनी बांडों तक हो गया जिससे विशेष रूप से यूरोपीय फर्मों द्वारा बांड निर्गम लगभग बंद हो गया। 2010 की पहली छमाही के दौरान अमरीका में सुधार के चिह्न दिखने से, कंपनी बांड स्प्रेड कुछ कम हो गया (चार्ट II.6)। एशिया, लैटिन अमरीका, यूरोप, मध्य पूर्व और अफ्रीका के उभरते बाजार के देशों में भी मई 2010 से कड़ी वित्तीय स्थिति देखी गई क्योंकि यूरो क्षेत्र में जोखिम बढ़ गई थी जिससे कंपनी बांडों और इक्विटी का निर्गम वास्तव में बंद हो गया था, हालांकि कुछ क्षेत्र अन्य की तुलना में अधिक प्रभावित हुए थे। ये कड़ी स्थितियां जारी रहने से निजी फर्मों को कर्ज की उपलब्धता प्रभावित होनी शुरू हुई होती।

4. वैश्विक बैंकिंग गतिविधियां

2.16 वैश्विक बैंकिंग उद्योग संबंधी एक महत्वपूर्ण सकारात्मक गतिविधि यह थी कि 2008 की चौथी तिमाही में शुरू हुई बीआइएस सूचनादाता बैंकों के अंतरराष्ट्रीय तुलनपत्रों का

संकुचन 2010 के पहले तीन महीनों के दौरान रुक गया (चार्ट II.7)। बीआइएस (तिमाही समीक्षा, सितंबर 2010) के अनुसार, सुधार यूके और अमरीका के निवासियों पर अंतरराष्ट्रीय दावों में काफी वृद्धि से प्रेरित था। इसे एशिया-पैसिफिक और लैटिन अमरीका तथा कैरिबियन, ऐसे पहले दो क्षेत्र जहां 2009 की दूसरी तिमाही में अंतरराष्ट्रीय उधार में सकारात्मक संकटोत्तर वृद्धि देखी गई थी, पर सीमा पारीय दावों में लगातार वृद्धि से भी सहायता मिली थी। यूरो क्षेत्रों और उभरते यूरोप पर दावे लगातार कम होते रहे। फिर भी, अंतरराष्ट्रीय रूप से सक्रिय बैंकों ने ग्रीस, आयरलैंड, पुर्तगाल और स्पेन के प्रति अपना एक्सपोजर बढ़ाया जो कि मुख्यतः बढ़ते तुलनपत्रेतर मदों का परिणाम था।

2.17 सामान्यतः सुधर चुकी आर्थिक स्थिति और लेहमन ब्रदर्स की विफलता के बाद संभलने की दीर्घावधि के बावजूद, यूरो क्षेत्र में सरकारी ऋण तनाव उभरने के कारण अप्रैल और मई 2010 में वैश्विक वित्तीय स्थिरता में बाधा उत्पन्न हुई। आइएमएफ ने संकेत दिया कि पीआइआइजीएस (पुर्तगाल, आयरलैंड, इटली, ग्रीस और स्पेन) देशों में अवधिपूर्ण हो रहे बांडों के लिए लगभग 300 बिलियन यूरो की व्यापक पुनर्वित्त की आवश्यकता में अन्य क्षेत्रों तक फैल जाने तथा अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव डालने की शक्ति है। इस प्रकार, पहले ही किए गए व्यापक राष्ट्रीय और उससे अधिक नीतिगत



प्रतिसादों के और निर्णायक अनुपालन को मजबूत करना आवश्यक होगा ताकि वित्तीय प्रणाली में विश्वास भरा जा सके और आर्थिक सुधार की निरंतरता सुनिश्चित की जा सके। आगे बढ़ते हुए, पीआइआइजीएस में व्यापक रोलओवर की आवश्यकता से बांड बाजार पर अलंघनीय दबाव आ जाएगा क्योंकि तीसरी और चौथी तिमाही में शोधन के लिए देय हो रहे बांडों के लिए लगभग 4 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के निधीयन की आवश्यकता अमरीका, यूके, जापान और यूरोज़ोन के सामने आ जाएगी। इसका अर्थ यह है कि विशेष रूप से यूरोजोन के बैंकों को संविभागीय जोखिम संभालने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा और संभाव्य अस्थिरता ने वित्तीय संस्थाओं के बांडों के प्राथमिक बाजार को पहले ही मंद कर दिया है।

2.18 बीआइएस वार्षिक रिपोर्ट 2009-10 में उल्लेख किया गया है कि बैंकों द्वारा लाभप्रदता पर वापस पहुंचकर 2009 में अपना पूंजी अनुपात मजबूत किया गया (सारणी II.3)। किंतु, बैंकों के लाभ लगातार मुख्यतह निर्धारित आय और मुद्रा परिचालनों से प्राप्त कम गुणवत्ता के राजस्व पर निर्भर बने रहे। आगे, बैंकों को तीन मुख्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, नामतः उनकी देयताओं के बड़े भाग का पुनर्वित्तीयन, सरकारी बैंकों द्वारा आपातकालीन सहायता उपायों पर निर्भरता की समाप्ति और तुलन पत्रीय कमजोरियों को दूर करना और परिचालन लागत घटाना।

2.19 आइएमएफ की अक्टूबर 2009 की जीएसएफआर के अनुमान के अनुसार 2007-10 की अवधि के लिए वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के कुल अवलेखन और उधार-प्रावधान उधार-हानियों की समस्या के कारण लगभग 2.8 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर होंगे (सारणी II.4)। अमरीकी बैंकों के लिए अवलेखन और उधार-प्रावधान की आवश्यकता 1.025 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के साथ सर्वाधिक थी जिसके बाद 0.814 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के साथ यूरो क्षेत्र के बैंकों और 0.604 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के साथ यूके के बैंकों का स्थान था। किंतु, निहित कुल हानि दर 5.0 प्रतिशत से कम होकर 4.1 प्रतिशत रह जाने की अनुमानित गिरावट के कारण अप्रैल 2010 के जीएसएफआर ने अनुमानित वैश्विक अवलेखन और उधार-प्रावधान की मात्रा को 2.8 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से कम करके 2.3 ट्रिलियन

सारणी II.3: इक्विटी पर बैंकों के प्रतिलाभ

(प्रतिशत)

देश	2006	2007	2008	2009
1	2	3	4	5
अमरीका	12.3	7.8	0.4	0.9
यूके	8.9	6.2	-10.3	2.6
यूरो क्षेत्र*	13.6	11.9	-8.0	1.2
जापान	8.5	6.1	-6.9	4.7
स्विटजरलैंड	17.7	15.4	5.4	8.2
बेल्जियम	22.4	13.2	-36.5	-2.7
फ्रांस	14.0	9.8	-1.0	8.2
जर्मनी	9.4	6.6	-7.7	-
पुर्तगाल	17.0	16.6	5.7	6.6
इटली	14.3	12.8	4.5	3.6
ग्रीस	12.7	14.8	3.2	-1.5
स्पेन	19.7	20.9	12.6	9.3
ब्राजील	27.3	28.8	15.3	20.4
रूस	26.3	22.7	13.3	4.9
भारत	12.7	13.2	12.5	12.3
चीन	14.9	16.7	17.1	15.1
इंडोनेशिया	22.4	23.2	15.5	18.4
मलेशिया	16.2	19.7	18.5	16.1
फिलीपीन्स	3.2	8.7	6.9	10.8
थाईलैंड	8.5	1.2	10.3	9.5
मेक्सिको	25.9	19.9	15.5	12.8

* यूरो क्षेत्र के बड़े और जटिल बैंकिंग समूहों से संबंधित है जैसा कि ईसीबी के एफएसआर, जून 2010 में सूचित किया गया है।

स्रोत: आइएमएफ; ईसीबी।

अमरीकी डॉलर कर दिया। इस कमी के बावजूद, इस बात के कम संकेत हैं कि लेखांकन प्रक्रिया में अंतर, क्षेत्रों के बीच सूचना

सारणी II.4: कुल उधार के प्रति बैंकों के गैर-निष्पादक उधार का अनुपात

(प्रतिशत)

देश	2006	2007	2008	2009
1	2	3	4	5
अमरीका	0.8	1.4	2.9	5.4
यूके	0.9	0.9	1.6	3.5
फ्रांस	3.0	2.7	2.8	3.6
जर्मनी	3.4	2.6	2.8	3.3
पुर्तगाल	1.3	1.5	2.0	3.2
इटली	4.9	4.6	4.9	7.0
ग्रीस	5.4	4.5	5.0	7.7
स्पेन	0.7	0.9	3.4	5.1
आयरलैंड	0.7	0.8	2.6	9.0
ब्राजील	3.5	3	3.1	4.2
रूस	2.4	2.5	3.8	9.7
भारत	3.3	2.5	2.3	2.3
चीन	7.1	6.2	2.4	1.6
मेक्सिको	2.0	2.7	3.2	3.1
इंडोनेशिया	6.0	4.1	3.2	3.3
मलेशिया	8.5	6.5	4.8	3.7
पाकिस्तान	6.9	7.6	10.5	12.2
फिलीपीन्स	7.5	5.8	4.5	4.1
थाईलैंड	8.1	7.9	5.7	5.3

स्रोत: आइएमएफ।

देने में विलंब, भावी कमियों का अनिश्चित पथ और बैंकों द्वारा बेचे गए ऋणों की अवधिपूर्णता के विस्तार से हानियों के गुप्त छिपाव के परिणाम स्वरूप कमियों के अनुमानों को घेरती अनिश्चितता के कारण हानियां अंतिम रूप से समाप्त हो गई हैं।

2.20 केंद्रीय बैंक की सहायता और सरकार द्वारा बैंकिंग प्रणाली में पूंजी की आपूर्ति से बढ़ते आस्ति मूल्यों और व्यापार आय से बैंकों को 2009 में संकट से बाहर निकलने और लाभप्रदता की स्थिति में आने में सहायता मिली। बैंक 1,236 बिलियन अमरीकी डॉलर की पूंजी जुटाने में भी समर्थ हुए जिससे 2010 के मध्य तक हुई 1,306 बिलियन अमरीकी डॉलर की वास्तविक हानि की क्षतिपूर्ति हुई। 2009 के अंत तक और बैंकों द्वारा जुटाई गई नई पूंजी के साथ, अमरीकी और यूरोपीय बैंकों की पूंजी संरचना में गुणात्मक सुधार देखा गया क्योंकि निजी कर्ज में धीमी वृद्धि और सरकारी प्रतिभूति तथा अन्य चलनिधि आस्तियों में अंतरण के कारण टियर I पूंजी 15 वर्ष के अपने चरम स्तर पर पहुंच गई थी (सारणी II.5)। किंतु, वैश्विक स्तर पर, बैंकिंग प्रणाली को जोखिम हटाने के लिए अब भी व्यापक पूंजी की आवश्यकता है। इस स्थिति में, बासेल II के तहत विस्तारित पूंजी प्रस्तावों का बैंकों के तुलन पत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा जिससे चलनिधि और कर्ज की

उपलब्धता कम हो सकती है जो बैंक केंद्रित अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित कर सकती है।

अमरीकी बैंकिंग प्रणाली

2.21 अमरीकी वाणिज्य बैंकिंग क्षेत्र 2009 में काफी दबाव में रहा, हालांकि 2009 की पहली तिमाही में ट्रेजरी द्वारा आयोजित तनाव जांच ने निवेशक भावना को जारी रखने और बाजार की अस्थिरता तथा अनिश्चय कम करने में मदद की। फेडरल रिजर्व और अन्य अमरीकी पर्यवेक्षकों ने मई 2009 में पर्यवेक्षी पूंजी आकलन कार्यक्रम (एससीएपी) संचालित किया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि प्रत्येक बैंकिंग संस्था को उस समय स्वयं को मजबूत रखने के लिए कितना अतिरिक्त पूंजी बफर, यदि कोई हो, आवश्यक होगा जिससे यह सुनिश्चित होगा कि अर्थव्यवस्था के आशंका से अधिक दुर्बल हो जाने की स्थिति में बैंक के पास पर्याप्त पूंजी होगी। फेडरल रिजर्व द्वारा अन्य बैंक पर्यवेक्षकों के साथ मिलकर मई 2009 में कंपनियों के धारक 19 बड़े अमरीकी बैंकों की तनाव जांच की गई थी जिसके परिणामों से पता चला कि वित्तीय प्रणाली में विश्वास की पुनर्बहाली के लिए 75 बिलियन अमरीकी डॉलर की अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता थी।

2.22 मंद कर्ज बाजार के बावजूद, अमरीकी बैंकों की लाभप्रदता 2010 की पहली तिमाही में सुधर गई जैसा कि अनेक बैंकों ने कर्ज गुणवत्ता में अस्थायी सुधार दर्शाया था। अमरीकी बैंकों में सभी मुख्य उधार श्रेणियों के लिए आस्ति गुणवत्ता ने 2010 में सामान्य प्रवृत्ति दर्शाई (चार्ट II.8)। विशेष रूप से, सबसे बड़ी बैंक धारक चार कंपनियों ने 2010 की पहली तिमाही में लाभ दर्ज किया क्योंकि व्यापारी राजस्व और कम हानि प्रावधानीकरण से आय में वृद्धि हुई थी। किंतु, क्षेत्रीय और छोटे बैंक लाभप्रदता के संबंध में लगातार संघर्ष करते रहे क्योंकि कोर उधार परिचालनों पर कर्ज हानि लगातार अधिक बनी रही। इसके अलावा, छोटे बैंकों की विफलता 2010 में भी लगभग 2009 की गति पर ही बनी रही जो कि मुख्यतः वाणिज्यिक स्थावर संपदा उधार पर कर्ज हानियों से प्रेरित थी।

यूरोजोन बैंकिंग प्रणाली

2.23 यूरो क्षेत्र के अनेक बड़े और जटिल बैंकिंग समूह (एलसीबीजी) का वित्तीय निष्पादन उनके तुलन पत्रों को मजबूत

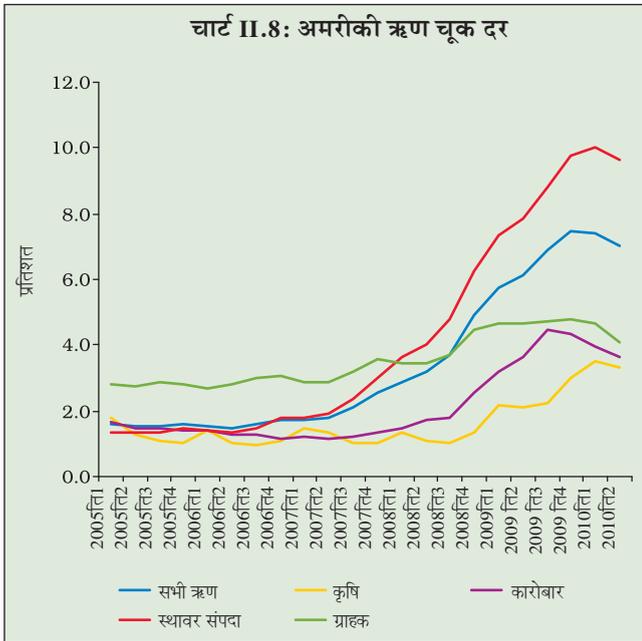
सारणी II.5: जोखिम भारित आस्तियों के प्रति बैंकों की विनियामक पूंजी

(प्रतिशत)

देश	2005	2006	2007	2008	2009
1	2	3	4	5	6
अमरीका	12.9	13.0	12.8	12.8	14.3
यूके	12.8	12.9	12.6	12.9	14.8
जापान	12.2	13.1	12.3	12.4	15.8
फ्रांस	11.3	10.9	10.2	10.5	12.4
जर्मनी	12.2	12.5	12.9	13.6	14.8
पुर्तगाल	11.3	10.9	10.4	9.4	10.5
इटली	10.6	10.7	10.4	10.8	12.1
ग्रीस	13.2	12.2	11.2	9.4	11.7
स्पेन	11.0	11.2	10.6	11.3	12.2
ब्राजील	17.9	18.9	18.7	18.3	18.8
रूस	16.0	14.9	15.5	16.8	20.9
भारत	12.8	12.3	12.3	13.0	13.2
चीन	2.5	4.9	8.4	12.0	11.4
इंडोनेशिया	19.9	20.6	19.2	17.0	17.6
मलेशिया	13.7	13.5	13.2	12.6	15.4
फिलीपीन्स	17.6	18.1	15.7	15.5	15.8
थाईलैंड	13.2	13.6	14.8	13.9	15.8
मेक्सिको	14.3	16.1	15.9	15.3	15.9

स्रोत: आइएमएफ।

चार्ट II.8: अमरीकी ऋण चूक दर



बनाने के लिए किए गए प्रयासों के आधार पर 2010 की पहली तिमाही में मजबूत हो गया। यूरो क्षेत्र के एलसीबीजी का पूंजी अनुपात भी रखी गई आय की सहायता और सरकारी तथा निजी स्रोतों से पूंजी जुटाने के लिए किए गए प्रयासों के कारण 2009 के 10.1 प्रतिशत से बढ़कर 2010 की पहली तिमाही में 10.6 प्रतिशत हो गया। ईसीबी की जून 2010 की एफएसआर द्वारा दिए गए अनुमान के अनुसार, यूरो 515 बिलियन पर 2007 से 2010 की अवधि के लिए यूरो क्षेत्र बैंकिंग क्षेत्र के लिए प्रतिभूतियों और ऋणों पर संभाव्य संचयी अवलेखन दिसंबर 2009 एफएसआर में सूचित यूरो 553 बिलियन से कम था। किंतु, 2010 के प्रारंभिक महीनों में यूरो क्षेत्र में सरकारी कर्ज जोखिम संबंधी बाजार चिंता की बढ़ती गहनता ने अनेक जोखिमयुक्त संक्रामक चैनल खोल दिए हैं जिससे मई 2010 तक प्रतिकूल बाजार डायनामिक्स ने आस्ति बाजारों के दायरे को अपने वश में कर लिया। जून 2010 के ईसीबी एफएसआर के अनुसार, वित्तीय प्रणाली के लिए विद्यमान महत्वपूर्ण जोखिमों में निम्न बातें शामिल हैं: (i) निजी निवेश निकल जाने संबंधी मौजूदा या बढ़ते सरकारी वित्त की दीर्घकालिकता संबंधी चिंता, (ii) वित्तीय क्षेत्र और सरकारी वित्त के बीच प्रतिकूल प्रतिसूचना की निरंतरता, (iii) एलसीबीजी की लाभप्रदता में सुधार में विफलता और अर्थव्यवस्था को कर्ज के प्रावधानके प्रति प्रतिकूल

प्रतिसूचना, (iv) वाणिज्यिक संपत्ति बाजारों और केंद्रीय तथा पूर्वी यूरोपीय देशों के प्रति उधार संबंधी एक्सपोजर पर संकेंद्रण से जुड़ी वित्तीय संस्थाओं की संवेदनशीलता और, (v) समष्टि आर्थिक परिणाम अपेक्षाओं पर खरे उतरने में विफल होने की स्थिति में वित्तीय बाजार अस्थिरता में वृद्धि। बीआइएस वार्षिक रिपोर्ट 2009-10 के अनुसार, यूरोपीय बैंकिंग प्रणाली को अधिक पूंजी की जरूरत है, भले ही विस्तारित बासेल II व्यवस्था के तहत विनियामक पूंजी आवश्यकता में वृद्धि न हुई हो।

यूके बैंकिंग उद्योग

2.24 बैंक ऑफ इंग्लैंड और एक्सचेकर द्वारा विशेष चलनिधि योजना, इक्विटी आपूर्ति, बैंक देयताओं के प्रति कर्ज गारंटी योजना और दूषित आस्तियों के लिए आस्ति सुरक्षा योजना के रूप में किए गए अनेक उपायों से यूके के बैंकिंग क्षेत्र में सुधार होने में मदद मिली। यूके के बैंकों की बैंकिंग पुस्तकों में उनकी निहित मार्क-टू-मार्केट हानियां मार्च 2009 में आकलन से लगभग पचास प्रतिशत घट गई। यूके की बैंकिंग प्रणाली के लिए उधार हानि प्रावधान अप्रैल 2010 तक 99 बिलियन अमरीकी डॉलर कम होकर 398 बिलियन अमरीकी डॉलर रह गए जो निवासी बंधक पर अपेक्षित हानि में सुधार दर्शाते हैं। तदनुसार, 2009 की पहली छमाही के लिए अनुमानित हानि प्रावधान दर को आइएमएफ ने अप्रैल 2010 में संशोधित करके कम कर दिया। यूके की बैंकिंग प्रणाली ने 2009 में मजबूत लाभप्रदता और निवेशकों की जोखिम उठाने की तैयारी में सुधार का लाभ लेकर अपनी पूंजी की स्थिति मजबूत कर ली। यूके के प्रमुख बैंकों ने 2009 की दूसरी तिमाही के दौरान अतिरिक्त कोर टियर 1 पूंजी के अतिरिक्त 50 बिलियन पाउंड से अधिक की राशि जुटाई जिससे संकट के प्रारंभ के समय से कुल राशि 127 बिलियन पाउंड हो गई। 2009 के अंत का 9.6 प्रतिशत का कोर टियर 1 पूंजी अनुपात संकट-पूर्व के स्तर से अधिक हो गया किंतु ऐतिहासिक स्तर की तुलना में कम रहा।

2.25 बैंक ऑफ इंग्लैंड, एफएसआर, जून 2010 के अनुसार, पूंजी और चलनिधि बफर के बावजूद, यूके बैंकों को आगामी समय में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। यूके बैंकों को निधीयन की व्यापक राशि का पुनर्वित्तीयन करते समय कठिन

स्थिति में आघात-सहनीयता बनाए रखने की आवश्यकता है। आर्थिक सुधार को सहायता करने के लिए पर्याप्त उधार देने में उनका सामूहिक हित है और अधिक मांग करने वाली भावी विनियामक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए उनके लिए यह आवश्यक होगा कि वे भविष्य में पूंजी और चलनिधि के व्यापक बफर निर्माण करें। नया स्वतंत्र बैंकिंग आयोग 2011 में विनियामक और प्रतिस्पर्धा नीति की सिफारिश करेगा जो बैंकों के बीच प्रतिस्पर्धी उधार को बढ़ावा देगा और छोटे कारोबारियों की उधार तक पहुंच में सुधार करेगा। यूके बैंकों के लिए भविष्य में यह आवश्यक होगा कि वे अधिक मांग करने वाली भावी विनियामक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए पूंजी और चलनिधि के व्यापक बफर निर्माण करें।

उभरते बाजार

2.26 लाभ, टियर I पूंजी, लाभांश और बाजार मूल्य के संदर्भ में, उभरते बाजारों के बैंक वैश्विक बैंकिंग उद्योग का लगभग 25 प्रतिशत भाग हैं। उभरते बाजारों के बैंक बचत जुटाने में कुशल होते हैं जबकि पश्चिमी बैंकों ने कारोबारों के वित्तपोषण के लिए काफी उधार लिया था और वित्तीय संकट के समय उन्हें काफी हानि हुई थी। उभरते एशिया के बैंकों ने कम लागत के वित्तपोषण की स्थिति लाने वाली देशी बचतों में तेज वृद्धि और सुगम मौद्रिक नीतियों जैसी समष्टि आर्थिक स्थिति अनुकूल मिश्रण का काफी लाभ लिया। किंतु, भावी उधार और सरकारी बांडों के प्रति एक्सपोजर के कारण भविष्य में उधार और बाजार के जोखिम बढ़ सकती है।

2.27 उभरते बाजार समूह में बृहत्तम अर्थव्यवस्था, चीन में वैश्विक वित्तीय संकट के प्रभावों के बावजूद बैंक उधारों में तेजी देखी जा रही है। विनियामकों की इस चेतावनी के बावजूद कि उधार के बड़े भाग का उपयोग बुनियादी ढांचागत व्यय पर किया जाता है और संपत्ति बाजार की स्थिति बुरी हो सकती है, चीनी बैंकों ने 2008 में जारी नए ऋणों के दुगुने से भी अधिक अर्थात् 1,415 बिलियन अमरीकी डॉलर के रेकार्ड उधार 2009 में जारी किए। रेटिंग एजेंसी स्टैंडर्ड एंड पूअर के अनुसार, यदि स्थानीय सरकारी वित्तीयन के माध्यमों को दिया गया 30 प्रतिशत उधार अशोध्य हो जाता है तो यह बैंकों के समग्र गैर-निष्पादक उधार

अनुपात में 4 से 6 प्रतिशत अंक जोड़ता है जो कि इस समय सम्मानजनक स्तर पर है। चूकों से स्थावर संपदा एक्सपोजर भी प्रभावित हो जाए तो हानि बढ़ सकती है। ऋण उधार देने का कोटा लागू करके बैंक उधार कम करने के विनियामक उपाय का कुछ प्रभाव चीनी अर्थव्यवस्था पर हुआ था और उसकी जीडीपी वृद्धि 2010 की पहली तिमाही के 11.9 प्रतिशत से कम होकर दूसरी तिमाही में 10.3 प्रतिशत रह गई थी। पीपल्स बैंक ऑफ चाइना ने संकेत दिया है कि वह 2010 के लिए अपना कर्ज का लक्ष्य 1,127 बिलियन अमरीकी डॉलर बनाए रखेगा। बैंकों से यह भी कहा गया है कि कम कड़ाई से विनियमित न्यासों को बेचे या अंतरित किए गए सभी उधार वापस अपनी पुस्तकों पर लें और 'अनौपचारिक प्रतिभूतिकरण' से दूर रहें। इस उपाय से यह अपेक्षित है कि कुछ बैंक भारी दबाव में आ जाएंगे और भारी मात्रा में कर्ज तुलन पत्र से बाहर रहने से उनके लिए पूंजीकरण का एक और दौर आवश्यक होगा। पीपल्स बैंक ऑफ चाइना द्वारा 2008 में जारी वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, चीन में बैंकों के लिए आगे यह आवश्यक होगा कि वे कंपनी संचालन स्थापित करके उसमें सुधार करें, पैमाना नियंत्रण और जोखिम नियंत्रण बढ़ाएं, जोखिम मुआवजा प्रणाली को स्पष्ट करें और मानक बाह्य विनियमन और आकलन प्रणाली स्थापित करें ताकि आर्थिक और सामाजिक विकास में उनकी भूमिका और भी सुदृढ़ हो जाए।

2.28 ब्राजील और रूस जैसे उभरते बाजारों में बैंकों ने अपने बाजार हिस्से में काफी सुधार किया है। बैंकों सेंट्रल डू ब्राजील द्वारा अप्रैल 2010 में जारी एफएसआर के अनुसार, ब्राजील में 2009 के अंत तक आर्थिक सुधार में मजबूती का देशी बैंकिंग प्रणाली में ऋण, चलनिधि, शोधन क्षमता और लाभप्रदता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उच्च स्तरीय चलनिधि आस्तियों को बड़ी मात्रा में धारण करने के कारण ब्राजील की बैंकिंग संस्थाओं की शोधन क्षमता का स्तर 2009 के अंत में ऊंचा बना रहा। बढ़ाई गई पूंजी और अपने पास रखे गए लाभ से बासेल पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर) में 0.2 प्रतिशत अंक की वृद्धि होने और लीवरेज में 0.4 प्रतिशत की गिरावट आने में मदद मिली। दबावयुक्त समष्टि आर्थिक वेरिएबल पर आधारित परिदृश्य विश्लेषण ने सूचित किया कि ब्राजील की

बैंकिंग प्रणाली की शोधन क्षमता संगत तरीके से प्रभावित नहीं होगी। इस परिदृश्य में, समग्र प्रणाली सीएआर जून 2011 में 15.0 प्रतिशत पर पहुंचने की संभावना है जो कि 11 प्रतिशत के विनियामक न्यूनतम से काफी अधिक है। बैंकिंग प्रणाली की लाभप्रदता लगातार संतोषप्रद बनी हुई है जो मुख्यतः कारोबार की बढ़ी हुई मात्रा और राजद्व के स्रोतों की विविधता का परिणाम है। आय की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका कारण लाभ के संयोजन में गैर-परिचालनीय आय की सहभागिता पिछली तिमाहियों में से प्रत्येक में साक्ष्यांकित की तुलना में कम थी।

2.29 रूसी बैंकों ने परंपरागत रूप से जमा राशि जुटाने, कर्ज प्रस्तावित करने, लाभ कमाने के लिए जोखिम का प्रबंध करने जैसे कुछ ही कोर कार्य किए हैं और प्रभावी रूप से कार्य किया है ताकि लाभ बढ़ सके। किंतु, चालू संकट ने दर्शाया कि अनेक रूसी बैंकों ने चलनिधि जमा की थी और अपने कोर कार्य ठीक से नहीं किए थे। किंतु, चालू संकट के बावजूद, रूसी बैंकिंग प्रणाली में वृद्धि की मजबूत संभावना निरंतर बनी रही। बैंकिंग सेवाओं के लिए रूसी बाजार व्यापक रूप से प्रतिकूल बना रहा और 2020 तक यह 15 से 20 प्रतिशत बढ़ने की संभावना है। आस्ति प्रबंधन, पट्टे पर देना और बंधक रखना ऐसे कुछ मुख्य वित्तीय उत्पाद हैं जो अगले कुछ वर्षों में रूसी बैंकिंग सेवाओं में वृद्धि के प्रेरक होंगे।

2.30 सामान्य रूप से अन्य उभरती एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में भी अगले दो वर्षों में वृद्धि की संभावना में सुधार के साथ सुधार हुआ, हालांकि धीमी वैश्विक वृद्धि, प्रोत्साहन उपायों की वापसी, अंतरराष्ट्रीय पण्य मूल्यों में तेज वृद्धि और खराब होती राजकोषीय स्थिति ने वृद्धि के सामने बाधा खड़ी कर दी थी।

खाड़ी क्षेत्र का बैंकिंग उद्योग

2.31 खाड़ी क्षेत्र में निवेश बैंकों का निष्पादन जोखिम प्रबंधन में गंभीर कमियों, स्थावर संपदा क्षेत्र के प्रति अति एक्सपोजर और आवर्ती शुल्क आधारित राजस्व के बजाय स्वामित्व निवेश पर पेपर लाभ पर निर्भरता के कारण गंभीर रूप से समझौते की स्थिति में है। खाड़ी क्षेत्र में बैंकिंग उद्योग कई बिलियन डॉलर के निवेश अवलेखन, काम बंदी और अनेक चूकों से हिल गया है जबकि इस तेल संपन्न क्षेत्र में ये बातें अपवादात्मक रूप से

ही दिखती थी। अब जबकि क्षेत्रीय आर्थिक सुधार हो रहा है, खाड़ी के बैंकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने कारोबारी मॉडल को अधिक विविधतायुक्त राजस्व स्रोतों की ओर पुनःसंरचित करें और अल्पावधि थोक निधीयन पर निर्भरता कम करें जो कि दूषित अवधिपूर्णता बेमेल बनाती है।

वित्तीय स्थिरता का नया ढांचा

2.32 स्पष्ट अनुगमन और समष्टि आर्थिक तथा वित्तीय स्थिरता हाल के वैश्विक वित्तीय संकट से दूर जाने का एकमात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्ग है। जबकि बहुपक्षीय और मानक बनाने वाले निकाय संशोधित वैश्विक विनियमन के मानदंड स्थापित कर रहे हैं, वहीं विश्व भर के देश वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए नए ढांचे लागू कर रहे हैं (बॉक्स II.1)।

5. समापन

2.33 समापन में, 2009-10 में वैश्विक बैंकिंग उद्योग द्वारा पूंजी, चलनिधि और लाभप्रदता के संदर्भ में देखे गए सुधार के बावजूद, विभिन्न अधोमुखी जोखिमों संबंधी चिंता बनी रही। वैश्विक बैंकिंग उद्योग लगातार आस्ति गुणवत्ता तथा लाभप्रदता सुधारने की दृष्टि से अपने तुलन पत्रों को ठीक करने की चुनौतियों का सामना कर रहा है। विस्तारित बासेल II ढांचे के तहत नए बैंक पूंजी नियमों के अनुसार, बैंकों को उनकी जोखिम भारित आस्तियों का 6 प्रतिशत टियर I की पूंजी रखनी होगी जो कि 4 प्रतिशत की वर्तमान अपेक्षा से काफी अधिक है। किंतु, 2019 तक की विस्तारित अवधि में एक दीर्घ चरण इस चिंता को दूर करेगा कि उधारदाताओं को पूंजी जुटाने के लिए व्यापक प्रयास करने होंगे। बैंकों के लिए टियर-1 पूंजी अपेक्षा का पालन करना अपेक्षित नहीं होगा जिसमें शेयर और अपने पास रखी गई आय शामिल होती है जो कि 2015 तक 4.5 प्रतिशत है। 2.5 प्रतिशत का अतिरिक्त पूंजी संरक्षण बफर 2019 तक रखने की आवश्यकता नहीं होगी। फिर भी, उच्च पूंजी प्रभार के लिए बीसीबीएस के प्रस्ताव के अनुकूल, यूरो क्षेत्र जैसे कुछ क्षेत्रों में बैंकिंग उद्योग को पुनःपूंजीकरण की चुनौती का सामना करना पड़ सकता है, विशेष रूप से तब जब यूरो क्षेत्र के देश भविष्य में राजकोषीय समेकन के प्रयासों में जुट जाएंगे।

बॉक्स II.1: वित्तीय स्थिरता के लिए संस्थागत ढांचे का विकास

दीर्घाविधि में वित्तीय स्थिरता के पर्यवेक्षण के लिए सतर्कतापूर्वक अभिकल्पित ऐसे ढांचे का कार्यान्वयन अपेक्षित है जो कारगर हो तथा जिसे कुछ समय में जनता का समर्थन प्राप्त हो। प्रमुख देशों में वित्तीय स्थिरता के लिए संस्थागत ढांचे के पुनःकल्पन का प्रस्ताव किया है।

संयुक्त राज्य: 21 जुलाई 2010 को संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित '2010 का अमरीकी वित्तीय स्थिरता की बहाली अधिनियम' के फलस्वरूप वर्तमान विनियामक ढांचे में परिवर्तन होगा। इन परिवर्तनों से जिन संस्थाओं पर प्रभाव पड़ेगा, उनमें वर्तमान में वित्तीय प्रणाली की निगरानी के कार्य में संलग्न अधिकांश विनियामक एजेंसियां (फेडरल डिपॉजिट इन्शुरन्स कारपोरेशन (एफडीआईसी), सिक्यूरिटीज एक्सचेंज कमीशन, कंट्रोलर ऑफ करेंसी, फेडरल रिजर्व, सिक्यूरिटीज इन्वेस्टर प्रोटेक्शन कारपोरेशन, आदि) शामिल हैं, तथा ऑफिस ऑफ थ्रिफ्ट सुपरविजन (ओटीएस) का समापन भी शामिल है। विनियामक प्रतिस्पर्धा के निवारण तथा विनियामक कर्तव्यों के स्पष्टीकरण के लिए, उक्त अधिनियम द्वारा विनियामक प्रणाली को तीन अलग-अलग हिस्सों में विभाजित किया गया है, तथा प्रत्येक हिस्सा एक विशेष एजेंसी का प्राथमिक उत्तरदायित्व बन गया है। एफडीआईसी 50 बिलियन अमरीकी डालर के अंतर्गत आस्ति वाले राज्य बैंकों/थ्रिफ्ट के लिए उत्तरदायी है जबकि, मुद्रा नियंत्रण का कार्यालय 50 बिलियन अमरीकी डालर के अंतर्गत आस्ति वाले राष्ट्रीय बैंकों/थ्रिफ्ट के लिए उत्तरदायी है। अन्य सभी बैंक/थ्रिफ्ट, बैंक धारक कंपनियां (तथा आवश्यक समझी गयी संस्थाएं) फेडरल रिजर्व की जिम्मेदारी होंगी। फेडरल रिजर्व द्वारा कुछ बैंकेतर वित्तीय कंपनियों तथा उनकी सहायक संस्थाओं का भी पर्यवेक्षण उसी रूप में तथा उसी सीमा तक किया जाएगा जैसे कि वे एक बैंक धारक कंपनी हों। उक्त अधिनियम द्वारा गठित तीन नयी एजेंसियों में शामिल हैं - (i) फाइनेंशियल स्टैबिलिटी ओवरसाइट कौंसिल (एफएसओसी), (ii) ऑफिस ऑफ फाइनेंशियल रिसर्च (ओएफआर) तथा (iii) ब्यूरो ऑफ कंज्यूमर फाइनेंशियल प्रोटेक्शन (बीसीएफआर)।

एफएसओसी तथा ओएफआर राजकोष विभाग से संबद्ध होंगे तथा राजकोष सचिव एफएसओसी के अध्यक्ष होंगे, ओएफआर की अध्यक्षता के लिए सिनेट की पुष्टि के साथ राष्ट्रपति द्वारा नियुक्ति की जाएगी। दूसरी ओर, बीसीएफआर फेडरल रिजर्व सिस्टम के भीतर रहेगा, तथा इसे संघीय कानून के अनुपालन में उपभोक्ता वित्तीय उत्पादों एवं सेवाओं के विनियमन का कार्य सौंपा जाएगा, इससे यह अपेक्षित होगा कि यह सिनेट बैंकिंग कमिटी तथा हाउस फाइनेंशियल सर्विसेज कमिटी को रिपोर्ट करे।

उक्त विधान द्वारा फेडरल रिजर्व को 'संयुक्त राज्य की वित्तीय स्थिरता के प्रति मौजूद जोखिमों की पहचान करने, उसकी माप करने, उस पर निगरानी रखने तथा उनका प्रशमन करने' का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। फेडरल रिजर्व द्वारा उनके पर्यवेक्षण के तहत आने वाली संस्थाओं के लिए विवेकपूर्ण मानक तैयार किया जाना जारी रखा जाएगा, जिनमें पूंजीगत अपेक्षा, लीवरेज अनुपात, चलनिधि संबंधी अपेक्षाएं आदि शामिल हैं।

यूनाइटेड किंगडम: 1997 में यूके ने बैंकिंग क्षेत्र के पर्यवेक्षण को केंद्रीय बैंक, फाइनेंशियल सर्विसेज अथॉरिटी (एफएसए) तथा ट्रेजरी के बीच विभाजित

किया। तथापि, हाल के संकट के दौरान वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने में इस मॉडल की प्रभावहीनता को देखते हुए, उक्त देश ने अब फाइनेंशियल सर्विसेज अथॉरिटी (एफएसए) की जिम्मेदारियों को विभाजित करने के लिए 'ट्विन पीक्स' मॉडल के प्रस्तावित कार्यान्वयन के साथ वित्तीय विनियमन के ढांचे को सुधारने का निर्णय लिया है। एफएसए की जिम्मेदारी को बैंक ऑफ इंग्लैंड के तहत मौजूद एक नए विवेकशील विनियामक तथा एक नए उपभोक्ता संरक्षण एवं बाजार प्राधिकरण के बीच विभाजित किया जाएगा। इन परिवर्तनों में बैंक ऑफ इंग्लैंड की मौद्रिक नीति संबंधी भूमिका के अलावा वित्तीय प्रणाली में जोखिम के निर्माण को रोकने में उसकी भूमिका पर फोकस किया जाएगा। साथ ही, इन सुधारों में समष्टि विवेकशील पर्यवेक्षण के साथ वित्तीय नीति समिति गठित करने का भी प्रस्ताव है ताकि आस्ति संबंधी बुलबुलों के निर्माण को रोका जा सके और प्रणालीगत जोखिम का प्रबंधन किया जा सके। विवेकशील विनियामक प्राधिकरण तथा वित्तीय नीति समिति दोनों गवर्नर, बैंक ऑफ इंग्लैंड की अध्यक्षता में कार्य करेंगे जिससे वे अलग-अलग बैंकों तथा वित्तीय प्रणाली दोनों के पर्यवेक्षण के केंद्र में होंगे।

यूरोपियन यूनियन: यूरो क्षेत्र में, जहां यूरोपियन सेंट्रल बैंक (ईसीबी) मौद्रिक नीति, विदेशी मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप तथा अंतरराष्ट्रीय एवं यूरोपीय सहयोग का प्रभारी है, वहीं वित्तीय स्थिरता की निगरानी एवं मूल्यांकन के लिए अलग प्रक्रियाएं मौजूद हैं। वर्तमान में, कमिटी ऑफ यूरोपीयन बैंकिंग सुपरवाइजर्स (सीईबीसी) द्वारा यूरोपियन कमीशन को बैंकिंग पर्यवेक्षण संबंधी नीतिगत एवं विनियामक मुद्दों पर सलाह दी जाती है। 2009 से, सीईबीसी को यह कार्य सौंपा गया है कि वह बैंक क्षेत्र का नियमित विश्लेषण करे तथा बैंकिंग क्षेत्र की जोखिमों एवं उसकी असुरक्षितताओं का आकलन करे और इसके परिणामों की सूचना आवधिक तौर पर यूरोपियन यूनियन की राजनैतिक संस्थाओं को दे। तथापि, इस बात की जरूरत महसूस की गयी कि समग्र ईयू वित्तीय प्रणाली का समष्टि-विवेकशील पर्यवेक्षण करने के लिए एक निकाय स्थापित करके व्यष्टि और समष्टि-विवेकशील पर्यवेक्षण के बीच अंतर-क्रिया में सुधार लाया जाए। अतः ईयू ने यूरोपियन सिस्टेमिक रिस्क बोर्ड (ईएसआरबी) की स्थापना का प्रस्ताव किया है जो ईयू में समष्टि-विवेकशील पर्यवेक्षण के लिए जिम्मेवार होगा। ईएसआरबी की कार्यसूची पर एक महत्वपूर्ण विषय 'प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं' (एसआइएफआइ) से संबंधित है।

भारत: अगस्त 2010 में प्रतिभूति तथा बीमा विधि (संशोधन और वैधीकरण) विधेयक पारित कर दिया गया जिसमें सरकार को शीर्ष वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद के गठन का अधिकार दिया गया जिसके प्रमुख वित्त मंत्री होंगे। इस परिषद का प्रयोजन वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए प्रणाली का संस्थानीकरण करना और अंतर-विनियामक विवादों का निपटारा करना है। इस परिषद की एक उप-समिति होगी जो वित्तीय स्थिरता और अंतर-विनियामक समन्वय करेगी और इसके प्रमुख रिजर्व बैंक के गवर्नर होंगे। विनियामकों के बीच की किसी भी असहमति को दूर करने के लिए यह उप-समिति पहला पड़ाव होगी।

संकट के बाद के परिदृश्य में, वित्तीय स्थिरता के लिए विनियामक व्यवस्था के पसंदीदा ढांचे के बारे में विभिन्न देशों के बीच अलग-अलग राय है।